# Surya Chalisa

## *Presented by Spiritual Curiosity (spiritualcuriosity.org)*

---

### सूर्य चालीसा

**दोहा**

**कनक बदन कुण्डल मकर, मुक्ता माला अङ्ग ।**
**पद्मासन स्थित ध्याइये, शंख चक्र के सङ्ग ॥**

---

**चौपाई**

**जय सविता जय जयति दिवाकर । सहस्त्रांशु सप्ताश्व तिमिरहर ॥**
**भानु पतंग मरीची भास्कर सविता । हंस सुनूर विभाकर ॥**

**विवस्वान आदित्य विकर्तन । मार्तण्ड हरिरूप विरोचन ॥**
**अम्बरमणि खग रवि कहलाते । वेद हिरण्यगर्भ कह गाते ॥**

**सहस्त्रांशु प्रद्योतन कहि कहि । मुनिगन होत प्रसन्न मोदलहि ॥**
**अरुण सदृश सारथी मनोहर । हाँकत हय साता चढ़ि रथ पर ॥**

**मंडल की महिमा अति न्यारी । तेज रूप केरी बलिहारी ॥**
**उच्चैःश्रवा सदृश हय जोते । देखि पुरंदर लज्जित होते ॥**

**मित्र मरीचि भानु । अरुण भास्कर सविता ॥**
**सूर्य अर्क खग । कलिकर पूषा रवि ॥**

**आदित्य नाम लै । हिरण्यगर्भाय नमः कहिकै ॥**
**द्वादश नाम प्रेम सों गावैं । मस्तक बारह बार नवावै ॥**

**चार पदारथ सो जन पावै । दुःख दारिद्र अध पुञ्ज नसावै ॥**
**नमस्कार को चमत्कार यह । विधि हरिहर कौ कृपासार यह ॥**

सेवै भानु तुमहिं मन लाई । अष्टसिद्धि नवनिधि तेहिं पाई ॥
बारह नाम उच्चारन करते । सहस जनम के पातक टरते ॥

उपाख्यान जो करते तव जन । रिपु सों जमलहते सोतेहि छन ॥
छन सुत जुत परिवार बढतु है । प्रबल मोह को फँद कटतु है ॥

अर्क शीश को रक्षा करते । रवि ललाट पर नित्य बिहरते ॥
सूर्य नेत्र पर नित्य विराजत । कर्ण देस पर दिनकर छाजत ॥

भानु नासिका वास रहु नित । भास्कर करत सदा मुख कौ हित ॥
ओंठ रहैं पर्जन्य हमारे । रसना बीच तीक्ष्ण बस प्यारे ॥

कंठ सुवर्ण रेत की शोभा । तिग्मतेजसः कांधे लोभा ॥
पूषां बाहू मित्र पीठहिं पर । त्वष्टा वरुण रहम सुउष्णाकर ॥

युगल हाथ पर रक्षा कारन । भानुमान उरसर्म सुउदरचन ॥
बसत नाभि आदित्य मनोहर । कटि मंह हँस रहत मन मुदभर ॥

जंघा गोपति सविता बासा । गुप्त दिवाकर करत हुलासा ॥
विवस्वान पद की रखवारी । बाहर बसते नित तम हारी ॥

सहस्त्रांशु सर्वांग सम्हारै । रक्षा कवच विचित्र विचारे ॥
अस जो जन अपने मन माहीं । भय जग बीज करहुँ तेहि नाहीं ॥

दरिद्र कुष्ट तेहिं कबहुँ न व्यापै । जो जन याको मनमहं जापै ॥
अंधकार जग का जो हरता । नव प्रकाश से आनन्द भरता ॥

ग्रह गण ग्रिस न मिटावत जाही । कोटि बार मैं प्रणवौं ताही ॥
मंद सदृश सुत जग में जाके । धर्मराज सम अद्भुत बाँके ॥

धन्य धन्य तुम दिनमनि देवा । किया करत सुर मुनि नर सेवा ॥
भक्ति भाव तुत पूर्ण नियमसों । दूर हटत सो भव के भ्रमसों ॥

परम माघ महं सूर्य फाल्गुन । मध वेदांग नाम रवि गावै ॥
भानु उदय वैसाख गिनावै । ज्येष्ट इन्द्र आषाढ़ रवि गावै ॥

यह भादों आश्विन हिमरेता । कार्तिक होत दिवाकर नेता ॥
अगहन भिन्न विष्णु हैं पूसहिं । पुरुष नाम रवि हैं मलमासहिं ॥

**दोहा**

**भानु चालीसा प्रेम युत, गावहि जे नर नित्य ।**
**सुख साम्पत्ति लहै विविध, होंहि सदा कृतकृत्य ॥**

**© Spiritual Curiosity**